



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

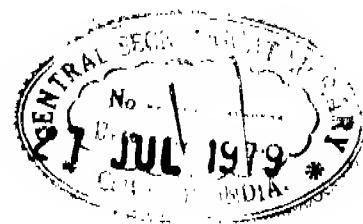
असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3 उप-खण्ड (i)

PART II—Section 3 Sub-section (i)

प्रधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY



सं० 178]

नई विस्तीर्ण, सोमवार, जून 11, 1979/ज्येष्ठ 21, 1901

No. 178]

NEW DELHI, MONDAY, JUNE 11, 1979/JYAISTHA 21, 1901

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संलग्न की जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा या सर्व

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

वित्त संवालय

(राजस्व विभाग)

प्रधिकारी

नई दिल्ली, 11 जून, 1979

सां० का० नि० 355 (ग्र).—केन्द्रीय सरकार, वित्त प्रधिनियम 1979 (1979 का 21) की धारा 40 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, निम्नलिखित नियम बनाए हैं, प्रथमतः—

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ :—(1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम विवेश याका कर नियम, 1979 है।

(2) ये पद्धति जून, 1979 को प्रवर्त्त होंगे।

2. परिमाणादः—इन नियमों में जब तक संवर्ध से भव्यता प्रपेक्षित न हो,—

(1) प्रधिनियम से वित्त प्रधिनियम, 1979 (1979 का 21) प्रभिप्रेत है;

(2) “सीमा शुल्क अपील कलक्टर” से सीमा शुल्क प्रधिनियम की धारा 4 के अधीन इस रूप में नियुक्त प्रधिकारी प्रभिप्रेत है;

(3) “सीमा शुल्क सहायक कलक्टर” से ऐसा प्रधिकारी प्रभिप्रेत है जिसे सीमा शुल्क प्रधिनियम की धारा 4 के अधीन इस रूप में नियुक्त किया गया है और जिसकी प्रधिकारिता उक्त प्रधिनियम के अधीन यथास्थापित पोत या बायुयान के प्रस्थान के सीमा शुल्क पतन या सीमा शुल्क विमान पतन पर है;

(4) “बाहक” से नियम 4 में निषिष्ट बाहक प्रभिप्रेत है;

(5) “सीमा शुल्क कलक्टर” से ऐसा प्रधिकारी प्रभिप्रेत है जिसे सीमा प्रधिनियम की धारा 4 के अधीन सीमा शुल्क कलक्टर या प्रपर सीमा शुल्क कलक्टर के रूप में नियुक्त किया गया है और जिसकी प्रधिकारिता उक्त प्रधिनियम के अधीन यथास्थापित पोत या बायुयान के प्रस्थान के सीमा शुल्क पतन या सीमा शुल्क विमान पतन पर है;

(6) “सीमा शुल्क प्रधिनियम” से सीमा शुल्क प्रधिनियम 1962 (1962 का 52) प्रभिप्रेत है;

(7) “प्रस्थ” से इन नियमों से उपाबद्ध प्रस्थ प्रभिप्रेत है;

(8) “सीमा-शुल्क प्रधिकारी” का वही अर्थ है, जो सीमा शुल्क प्रधिनियम में उसे दिया गया है;

(9) “कर” से प्रधिनियम के अध्याय 5 के अधीन उद्ग्रहणीय विवेश याका कर प्रभिप्रेत है;

(10) “याका” से उन राज्य क्षेत्रों में जिन पर प्रधिनियम के अध्याय 5 का विस्तार है पोतों या बायुयान के प्रस्थान के किसी सीमा शुल्क पतन या सीमा-शुल्क विमान पतन से भारत से बाहर के किसी स्थान को छाड़े सीधे या उन क्षेत्रों में जिन पर प्रधिनियम के अध्याय 5 का विस्तार है, किसी प्रथम सीमा-शुल्क पतन या सीमा शुल्क विमान पतन से होने के पश्चात किसी पोत या बायुयान की याका या भाना जाना प्रभिप्रेत है;

(11) “बजाना” से प्रभिप्रेत है—

(1) सीमा शुल्क संश्लेषण बजाना; या

(2) भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम 1934 (1934 का 2) की धारा 3 के अधीन गठित भारतीय रिजर्व बैंक या भारतीय स्टेट बैंक अधिनियम 1955 (1955 का 23) को धारा 3 के अधीन गठित भारतीय स्टेट बैंक, या बैंककारी कम्पनी (उपक्रमों का अर्जन और अस्तरण) अधिनियम, 1970 (1970 का 5) की धारा 3 के अधीन गठित कोई बैंक जिसमें इस नियम केन्द्रीय सरकार का खाता हो।

3. कर का संग्रहण :—कर का संग्रह अधिनियम की धारा 35 की उपधारा (2) के अधीन प्राप्तिकृत वाहक द्वारा किया जाएगा।

4. कर खाजने में संवत्त किया जाएगा :—किसी वाहक द्वारा किसी मास में भयंकरी कर, ऐसे वाहक द्वारा उस मास की समाप्ति के 30 दिन के प्रस्ताव के पूर्व ऐसे स्वान पर संवत्त किया जाएगा जहाँ पौत या वायुयान के प्रस्ताव का सीमा-शुल्क पतन या सीमा शुल्क विमान पतन स्थित है।

परन्तु सीमा शुल्क कलक्टर, किसी वाहक द्वारा पर्याप्त कारण दर्शाएँ जाने पर और किसी वाहक द्वारा स्वीकृत लेखा प्रणाली को व्यान में रखते हुए, ऐसे वाहक को उपरोक्त 30 दिन की अवधि से वीर्तर अवधि के प्रस्ताव के पूर्व कर का संदाय करने की संज्ञीय दे सकेगा।

5. कर के प्रतिवार के लिए दावा :—(1) वाहक, नियम 3 के अधीन खाजने में उड़के द्वारा कर के रूप में संवत्त किसी रकम के प्रतिवाय के लिए दावा उस कर के संदाय की तारीख से, जिसकी प्रतिवाय का दावा किया गया है, छह मास की समाप्ति के पूर्व सीमा शुल्क सहायक कलक्टर को ऐसे प्रतिवाय के लिए आवेदन करके, कर सकेगा।

(2) यदि ऐसे किसी आवेदन की प्राप्ति पर सीमा-शुल्क सहायक कलक्टर का समाधान हो जाए कि संदत कर का प्रतिवाय नहीं किया जाना चाहिए तो वह तदनुसार आवेदन दे सकेगा।

(6) संग्रहण प्रभार का संदाय :—सीमा शुल्क कलक्टर, प्रत्येक वित्तीय वर्ष की समाप्ति के पश्चात व्यावधाय शीघ्र, वाहक को उस वर्ष के दौरान खाजने में वाहक द्वारा संवत्त कर की रकम के एक प्रतिशत की दर से संग्रहण प्रभार का संदाय उस वर्ष के दौरान वाहक को किए गए प्रतिवायों को यदि कोई हों बढ़ा कर करेगा।

(7) असंदाय या न्यून संदाय या गलत रीति से प्रतिवाय किए गए कर के संदाय के लिए सूचना :—(1) जब कोई संघीय कर किसी भी कारण से नियम 4 के अधीन खाजने में संवत्त नहीं किया गया है या पूर्णतः संवत्त नहीं किया गया है या नियम 5 के अधीन गलत रीति से प्रतिवाय किया गया है तो सीमा शुल्क सहायक कलक्टर सुसंगत तारीख से छह मास के भीतर संवत्त वाहक पर सूचना तारीख करेगा जिसमें उससे विनिर्दिष्ट रकम का संदाय न करने का हेतुक वर्णित करने की अपेक्षा की जाएगी :

परन्तु जहाँ कोई कर संवत्त नहीं किया गया है या पूर्ण रूप से संदस्त नहीं किया गया है या वाहक द्वारा उसका प्रतिवाय दुर्लिखित या जान बूझकर किसी गलत कथन या तथ्यों को दबाने के कारण गलत रीति से किया गया है वहाँ हम उपनियम के उपर्युक्त ऐसे प्रभावी होंगे भालों “छह मास” शब्दों के स्थान पर “दो वर्ष” शब्द प्रतिवायित कर दिए गए हों।

(2) सीमा शुल्क सहायक कलक्टर ऐसे वाहक द्वारा जिसे उपनियम (1) के अधीन सूचना की तारीख की गई है, दिए गए प्रभावेष्ट पर, यदि कोई हो, विचार करने के पश्चात ऐसे वाहक से जोध्य कर की रकम का (जो सूचना में विनिर्दिष्ट रकम से अधिक न हो) अवधारणा करेगा और तबुपरि ऐसा वाहक इस प्रकार अवधारित रकम का संदाय करेगा।

(3) उपनियम (1) के प्रयोजनों के लिए “सुसंगत तारीख” पद से अमिश्रत है :—

(क) जहाँ कर संवत्त नहीं किया गया है मा पूर्ण संवत्त नहीं किया गया है, ऐसी अन्तराष्ट्रीय याक्ता के प्राप्तम् की तारीख, जिससे यथा स्विति, भ्रमावाय या न्यून संदाय संबंध है, या ऐसी तारीख, जिस पर वाहक विनियम के अधीन सुसंगत विवरणों काढ़ा कर देता है, इन में से जो भी बाद में हो :—

(ब) जहाँ नियम 5 के अधीन कर का प्रतिवाय गलत रीति से किया गया है वहाँ वह तारीख, जिसको प्रतिवाय किया गया था ।

8. यात्री रिपोर्ट :—(1) ऐसे प्रत्येक सीमा-शुल्क पतन या सीमा-शुल्क विमान पतन पर, जिस पर अधिनियम के अध्याय 5 का विस्तार है, पौत या वायुयान द्वारा प्रत्येक याक्ता के बारे में संबंधित वाहक यात्री रिपोर्ट की तीन प्रतियाँ तैयार करेगा, जिसमें याक्ता पर के सभी यात्रियों के नाम प्रश्न 1 में वर्णित किए जाएंगे, तथा पौत या वायुयान के प्रस्ताव के समय उन्हें उस सीमा-शुल्क प्रधाकारी को देगा जिसकी अधिकारिता उन राज्य-संघों में, जिन पर अधिनियम के अध्याय 5 का विस्तार है, यथास्थिति, पौत या वायुयान के प्रस्ताव का सीमा-शुल्क पतन/सीमा-शुल्क विमान पतन पर है।

(2) रिपोर्ट की उक्त प्रतियाँ प्राप्त करने वाला अधिकारी, स्पष्ट भ्रमापतन और अनुप्रमाणन के पश्चात एक प्रति वाहक को लौटा देगा ।

9. संगृहीत कर, भ्रादि से सम्बद्ध विवरणी :—प्रत्येक वाहक, जिससे वाया 4 के अधीन खाजने में कर का संदाय करने की अपेक्षा है, प्रत्येक मास की तारीख उस मास के दौरान प्रचालित प्रत्येक याक्ता की अनुप्रमाणित प्रति संक्षित प्रचालित उड़ानों की विविधियाँ, वहन किए गए यात्रियों की संख्या, संगृहीत और खाजने में संवत्त कर की रकम तथा प्रभिप्राप्त प्रतिवाय की रकम दर्शित करने हुए प्रश्न 2 में एक विवरणी उस मास के भ्रंत से तीस दिन की समाप्ति से पूर्व ऐसे सीमा-शुल्क कलक्टर या उसके नामनिवृत्तिन के सामने आइन करेगा जिसकी अधिकारिता उन राज्य-संघों में जिन पर अधिनियम के अध्याय 5 का विस्तार है, पौत या वायुयान के प्रस्ताव के सीमा-शुल्क पतन या सीमा-शुल्क विमान पतन पर है :

परन्तु सीमा-शुल्क कलक्टर किसी वाहक द्वारा अपनाई गई लेखा पद्धति को व्यान में पहले हुए ऐसे वाहक को पूर्वोक्त तीस दिन की अवधि से दीर्घीतर अवधि के प्रवतान के पूर्व ऐसी विवरणीयों काढ़ा दे सकेगा ।

10. वाहक द्वारा प्रधाकरों का परिरक्षण :—कर के रूप में संगृहीत रकमें जिन खाजना चालानों या वाउचरों के द्वारा खाजने में संवत्त की गई है, उनकी प्रतियाँ ऐसी अन्तराष्ट्रीय याक्ता से सम्बद्धित विवरणीयों की प्रतियाँ और अन्य सभी दस्तावेज़ (जो ऐसी दस्तावेज़ न हो जिनकी मूल प्रति या प्रतिलिपि किसी नियम के अधीन किसी सीमा-शुल्क अधिकारी के पास फाइल की गई है) वाहक द्वारा उग तारीख से जिसको देसी चालान, वाउचर, विवरणी या अन्य दस्तावेज़ तैयार किया गया था, 2 वर्ष की अवधि तक परिरक्षित रखी जाएंगे :

परन्तु सीमा-शुल्क कलक्टर लिखित आवेदन द्वारा और उसमें नेतृत्व दायरणों से किसी वाहक से किसी देसी चालान की प्रति, वाउचर, विवरणी या अन्य दस्तावेज़ का, 2 वर्ष की उक्त अवधि से दीर्घीतर अवधि के लिए, परिरक्षित करने की अपेक्षा कर सकेगा और ऐसा वाहक, जिसके प्रति ऐसा आवेदन किया गया है, ऐसा आवेदन का अनुपालन करेगा ।

11. शास्ति का न्यायनियन :—प्रत्येक मामले में, जिसमें अधिनियम की धारा 38 के अधीन कोई व्यक्ति शास्ति के लिए दायी है, ऐसी शास्ति सीमा-शुल्क अधिनियम की धारा 3(g) या 3(c) में उल्लिखित सीमा-शुल्क अधिकारी द्वारा न्यायनिर्णीत की जा सकती :

परन्तु सीमा-शुल्क अधिनियम की धारा 3 में उल्लिखित कोई सीमा-शुल्क अधिकारी, ऐसे किसी मामले में, पांच हजार रुपए से अधिक शास्ति अधिरोपित करने के लिए सक्षम नहीं होगा।

12. शास्ति के उद्घाटन के पूर्व हेतुक दर्शन करने के लिए सूचना जारी किया जाना:—कोई व्यक्ति पर कोई शास्ति अधिरोपित करने वाला आवेदन तब तक नहीं किया जाएगा जब तक ऐसे व्यक्ति को—

(क) जिस आदान पर शास्ति अधिरोपित करना प्रस्तावित है उसे बनाते हुए विवित रूप में सूचना नहीं दी जाती;

(ख) ऐसे युक्तियुक्त समय के भीतर जो सूचना में विविविष्ट किया जाए, सूचना में उल्लिखित शास्ति के अधिरोपण के आधारों के विवर विवित अध्यावेदन करने के लिए अवसर नहीं दिया जाता है; और

(ग) मामले में मुनाफाई के लिए सम्भवित अवसर नहीं दिया जाता:

परन्तु बाण (क) में निविष्ट सूचना और बाण (ख) में निविष्ट अध्यावेदन सम्बन्धित व्यक्ति की प्रेरणा पर भौतिक हो सकेगा।

13. अपील:—(1) सीमा-शुल्क अधिनियम की धारा 3(ग) में उल्लिखित किसी सीमा-शुल्क अधिकारी द्वारा अधिनियम, इन नियमों के अधीन पारित किसी विविष्यय या किसी आवेदन से व्यक्ति कोई डिक्टियर ऐसे विविष्यय या आवेदन की संसूचना की तारीख से तीन मास के भीतर ऐसे सीमा-शुल्क अपील कलक्टर को अपील करेगा, जिसे सीमा-शुल्क अधिनियम के अधीन ऐसे सीमा-शुल्क अधिकारी के आवेदन के विवर मामूली तौर पर अपील होती है:

परन्तु यदि अपील प्राधिकारी का यह समाधान हो जाए कि अपीलार्थी पर्याप्त कारण से उपरोक्त तीन मास की अवधि के भीतर अपील करने से निवारित हो गया था, तो तीन मास की अतिरिक्त अवधि के भीतर उसे पेश करने की अनुमति दे सकेगा।

(2) अपील प्राधिकारी अपीलार्थी को, यदि वह ऐसा जाहे सुमझाई का अवसर देने के पश्चात् और ऐसी जांच करने के पश्चात्, जो आवश्यक हो, उस विविष्यय या आदेश को, जिसके विवर अपील की गई हो, पूछ करते हुए, उपालंरित करते हुए या रद्द करते हुए ऐसा आवेदन पारित कर सकेगा, जिसे वह ठीक समझे:

परन्तु अपील प्राधिकारी द्वारा किसी शास्ति में वृद्धि करने वाला कोई आदेश पारित नहीं किया जाएगा।

परन्तु यह और कि जहाँ अपील प्राधिकारी की राय हो कि कोई कर वजाने में नियम 4 के अधीन संदर्भ नहीं किया गया है या शून्यतः संदर्भ नहीं किया गया है या नियम 5 के अधीन गलती से प्रतिवाय कर दिया गया है, वहाँ, जब तक अपीलार्थी को प्रस्तावित आवेदन के विवर नियम 7 में विविष्ट समय की परिसीमा के भीतर हेतुक वर्णित करने के लिए नियम देने वाला कोई आवेदन पारित नहीं किया जाएगा।

14. कलक्टर की पुनरीक्षण की अविनायी—सीमा-शुल्क अधिनियम की धारा 3(क) में उल्लिखित कोई सीमा-शुल्क अधिकारी स्वप्रेरणा से या किसी व्यक्ति के आवेदन पर ऐसे किसी विविष्यय या आवेदन की वैश्वधता या अधिकारी के बारे में अपना समाधान करने के प्रयोजन के लिए ऐसी किन्हीं कार्यदात्यों के अधिकारी को जिसमें उनके अधीनस्थ किसी सीमा-शुल्क अधिकारी ने अधिनियम या इन नियमों के अधीन कोई विविष्यय या आवेदन (जो नियम 13 के अधीन अपील में पारित आदेश नहीं हैं) पारित किया गया है, मंगा सकेगा और उसको परीक्षा कर लकेगा और उस पर ऐसा आदेश पारित कर सकेगा जो वह ठीक समझे:

परन्तु किसी शास्ति की वृद्धि करने वाला कोई आदेश इस नियम के अधीन तब तक पारित नहीं किया जाएगा जब तक प्रस्तावित आवेदन

द्वारा प्रभावित व्यक्ति को उसके विवर हेतुक वर्णित करने के लिए समुचित अवसर न दे दिया नया हो:

परन्तु यह और कि जहाँ सीमा-शुल्क अधिनियम की धारा 3(क) में उल्लिखित सीमा-शुल्क अधिकारी की यह राय हो कि वजाने में कोई कर नियम 4 के अधीन संदर्भ नहीं किया गया है या पूर्ण रूप से संदर्भ नहीं किया गया है या नियम 5 के अधीन गलती से उसका प्रतिवाय किया गया है वहाँ ऐसे कर के संवाय करने के लिए नियम देने वाला कोई भी आवेदन तब तक नहीं किया जाएगा जब तक प्रस्तावित आवेदन से प्रभावित होने वाले व्यक्ति को नियम 7 में विविष्ट समय की परिसीमा के भीतर उसके प्रति हेतुक वर्णित करने के लिए सूचना नहीं हो दी जाती।

(2) किसी विविष्यय या आदेश की बाबत ऐसे विविष्यय या आवेदन की तारीख से एक वर्ष की अवधि के अवसान के पश्चात् इस नियम के अधीन कोई कार्याई संस्कृत मही जी आएगी।

(3) सीमा-शुल्क अधिनियम की धारा 4 के अधीन सीमा-शुल्क प्रपट कलक्टर के रूप में नियुक्त कोई सीमा-शुल्क अधिकारी इस नियम के अधीन पुनरीक्षण की अविनायों का प्रयोग करने के लिए सक्षम नहीं होगा।

15. केन्द्रीय सरकार द्वारा पुनरीक्षण:—(1) केन्द्रीय सरकार, नियम 13 या नियम 14 के अधीन पारित किसी आवेदन से व्यक्ति के आवेदन पर ऐसा आवेदन को रद्द या उपालंरित कर सकेगी।

(2) उप-नियम (1) के अधीन प्रावेदन, जिस आवेदन के विवर प्रावेदन किया जाना है आवेदक को उसको संसूचना की तारीख से छः मास के भीतर, किया जाएगा।

परन्तु केन्द्रीय सरकार, अपना यह समाधान हो जाने पर कि आवेदक पर्याप्त कारण से उपरोक्त छः मास की अवधि के भीतर आवेदन को प्रस्तुत करने से निवारित हो गया था उसे प्रतिरिक्त छः मास की अवधि के भीतर प्रस्तुत करने की अनुमति दे सकेगी।

(3) केन्द्रीय सरकार नियम 13 या नियम 14 के अधीन पारित किसी आवेदन की स्वप्रेरणा से बातिल कर सकेगी या उपालंरित कर सकेगी।

(4) इस अधिनियम के अधीन शास्ति की वृद्धि करने वाला कोई आवेदन तब तक पारित मही किया जाएगा जब तक प्रस्तावित आवेदन से अधिनियम के अधीन गलती से प्रतिवाय किया गया है वहाँ ऐसे कर को संवाय करने के लिए नियम देने वाला आवेदन इस नियम के अधीन तब तक नहीं किया जाएगा जब तक प्रस्तावित आवेदन द्वारा प्रभावित व्यक्ति को नियम 7 में विविष्ट समय की परिसीमा के भीतर हेतुक वर्णित करने के लिए सूचना नहीं हो दी जाती।

(5) जहाँ केन्द्रीय सरकार की राय हो कि कोई कर वजाने में नियम 4 के अधीन संदर्भ नहीं किया गया है या पूर्णतः संदर्भ नहीं किया गया है या नियम 5 के अधीन गलती से प्रतिवाय किया गया है वहाँ ऐसे कर को संवाय करने के लिए नियम देने वाला आवेदन इस नियम के अधीन तब तक नहीं किया जाएगा जब तक प्रस्तावित आवेदन द्वारा प्रभावित व्यक्ति को नियम 7 में विविष्ट समय की परिसीमा के भीतर हेतुक वर्णित करने के लिए सूचना नहीं हो दी जाती।

16. सरकार को शोध रकमों की वसूली:—जहाँ अधिनियम के अध्याय 5 के अधीन किसी व्यक्ति से मांगा गया कोई कर या किसी व्यक्ति से संवेद्य कोई शास्ति संदर्भ नहीं की गई है वहाँ सीमा-शुल्क अधिनियम की धारा 5(प) में उल्लिखित सीमा-शुल्क अधिकारी अपने द्वारा हस्ताक्षरित प्रमाणपत्र, जिसमें शोध रकम विविष्ट की जाएगी तैयार करेगा और उसे उस जिले के कलक्टर को भेजेगा, जिसमें उक्त व्यक्ति सम्पत्ति का स्थानी है या निवास करता है या कारबार बसाता

है और उक्त कलक्टर ऐसे प्रमाण-पत्र की प्राप्ति पर उक्त व्यक्ति से उसमें विनिर्दिष्ट रकम की वसूली के लिए वैसे ही अग्रसर होगा मानों वह भू-राजस्व की बकाया हो।

17. निरीक्षण की शक्ति:— (1) सीमा-शुल्क के राजपत्रित अधिकारी के इस निमित्त विशेष या सांचारण आवेदन द्वारा प्राधिकृत प्रत्येक सीमा-शुल्क अधिकारी को यह अधिनियम करने के प्रयोजन के लिए कि अधिनियम या इन नियमों की अपेक्षाओं का अनुपालन किया गया है या नहीं। किसी समुचित समय पर बाहक के परिसर में प्रवेश करने की और उसमें पाए गए किसी व्यक्ति से, जो तत्समय उसका भार-साधक हो, किन्हीं लेखा-नहियों, विवरणियों या अन्य दस्तावेजों को उसके समक्ष उसके निरीक्षण के लिए पेश करने और उसे ऐसी अन्य जानकारी देने की अपेक्षा करने की शक्तियाँ होंगी जिसकी वह यह विनिश्चय करने के प्रयोजन के लिए कि अधिनियम या इन नियमों की अपेक्षाओं का अनुपालन किया गया है या नहीं युक्तियुक्त रूप से अपेक्षा करे।

(2) ऐसे प्रत्येक अधिकारी की अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा पर यात्रियों का बहुत करने में लगे किसी भी वायुयान पर पहुँचने के स्वतन्त्रता

भी होगी और कलक्टर पर के किसी व्यक्ति से उक्त प्रयोजन के लिए उपरोक्त दस्तावेजों में से किसी को प्रस्तुत करने और उपरोक्त जानकारी देने की अपेक्षा करने की शक्तियाँ होंगी।

18. पोत, वायुयान या परिसर की तलाशी की शक्तियाँ:— (1) यदि सीमा-शुल्क के किसी अधिकारी को जो सीमा-शुल्क सहायक कलक्टर की रैक से कम त हो यह विश्वास करने का कारण हो कि कोई दस्तावेज जो उसकी राय में अधिनियम या इन नियमों के अधीन किसी कार्यवाही में उपयोगी या सुरक्षित होंगे किसी पोत वायुयान या बाहक के परिसर में गुप्त रूप से छुपाए रखे हैं तो वह किसी सीमा-शुल्क अधिकारी को ऐसी दस्तावेजों की तलाशी लेने के लिए प्राधिकृत कर सकेगा।

(2) वर्ष प्रक्रिया संहिता 1973 (1974 का 2) के तलाशी से सम्बन्धित उपबन्ध, जहाँ तक वे लागू हों, उस नियम के अधीन तलाशी के सम्बन्ध में लागू होंगे।

[सं० 2/एफ०टी०टी०/79—एफ० 304/1/79—एफ०टी०टी०]

प्रकृष्ट 1

यात्री रिपोर्ट

(नियम 8 वेळिए)

बाहक का नाम
यात्रा सं
पहुँचान करने वाली विशिष्टियाँ या पीत / वायुयान
का नाम
प्रस्थान की तारीख
भारत से प्रस्थान का स्थल
मार्ग और आरम्भ और गतिष्ठ का स्थान

क्रम सं०	यात्री का नाम	पुरुष/स्त्री/बच्चा	भारत में चढ़ने के सीमा-शुल्क पत्रन या सीमा-शुल्क बायुयान-पत्रन	टिप्पणियाँ
1	2	3	4	5
(क) सम्मिलित होने वाले यात्रियों की कुल संख्या
(ख) ऊपर (क) में से ऐसे यात्रियों की संख्या, जिन्हें अधिवक्तन में कर के संवाद से छूट दे दी गई है
(ग) ऊपर (क) और (ख) में के बीच के अन्तर में से ऐसे यात्रियों की संख्या, जो पढ़ोसी देशों की यात्रा कर रहे हैं
(घ) ऊपर (क) और (ख) के बीच के अन्तर में से ऐसे यात्रियों की संख्या, जो पढ़ोसी देशों से यात्रा की जा रही है
(ङ) ऊपर (ग) के सामने की संख्या में से, वह संख्या जिसे कर के संवाद से छूट प्राप्त है
(च) ऊपर (घ) के सामने की संख्या में से, वह संख्या जिसे कर के संवाद से छूट प्राप्त है

मैं घोषित करता हूँ कि इस रिपोर्ट में वो गई विशिष्टियाँ मेरी सर्वोत्तम जानकारी और विश्वास के अनुसार यहीं और पूर्ण हैं।

तारीख..... बाहक के हस्ताक्षर

टिप्पण : 1. विदेश यात्रा कर के संवाद से छूट प्राप्त तात्रियों की आवत टिप्पणियों के स्तरमें कारण दीजिए और यह उपदण्डित करे कि क्या प्रमाणपत्र, जहाँ कहीं विहित किया गया है, संलग्न कर दिया गया है।

2. अधिवक्तन के ऐसे यात्रियों की आवत, जिसे विदेश यात्रा कर के संवाद से छूट प्राप्त है, वह उड़ान संख्या, जिससे वे पहुँचे हैं तथा उसकी तारीख उपर्याप्त कीजिए।

प्रत्येक 2

(नियम 9 वैधिक)

.....मास के दौरान प्रकालित उड़ानों, बहुन किए गए यात्रियों की संख्या, संगृहीत और बाजाने में संदर्भ कर की रकम तथा प्रभिप्राप्त प्रतिदाय की रकम की विविधियां दर्शित करने वाली विवरणी

बाहक का नाम

क्रम विवेग यात्रा कर के यात्रा संख्या और तारीख मं० निय० आव० चक्रानुव्रम्म संख्या	नियमिति होने वाले यात्रियों की कुल संख्या	स्तम्भ 3 में की संख्या में से विवेश यात्रा कर से से शूट प्राप्त प्रभिवहन के यात्रियों की संख्या	स्तम्भ 3 और 4 में की संख्या के बीच के अन्तर में से पढ़ेसी देशों को जाने अन्य देशों को जाने वाले यात्रियों की वाले यात्रियों की संख्या	स्तम्भ 3 और 4 में की संख्या के बीच के अन्तर में से पढ़ेसी देशों को जाने अन्य देशों को जाने	
1	2	3	4	5(क)	5(ख)
शूट प्राप्त यात्रियों की संख्या	विवेश कर	बाजाने में संदर्भ कुल कर (सभी चालान संख्याएं पूरक-पूर्यक उपदर्शित करें)*	मास के दौरान प्रभिप्राप्त प्रतिदाय		
स्तम्भ 5 (क) में स्तम्भ 5 (ख) में दर्शित संख्या में से	चालान सं०	रकम ₹०	प्रतिदाय आवेश संख्या	प्राप्त रकम और तारीख	
6(क)	6(ख)	7	8		9

मैं घोषित करता हूँ कि इस विवरणी में दी गई विविधियां मेरी सर्वोत्तम जानकारी और विष्वास के मनुसार सही और पूर्ण हैं। बाद में कोई त्रुटि निकालन की वज़ा, मैं, जिसके परिणामस्वरूप कर का संग्रहण किया गया है, मैं त्रुटि के लिए स्वयं को उत्तरदायी मानता हूँ और राजस्व में हुई परिणामिक हानि को पूरा करने के लिए भी सहमत हूँ।

तारीख.....

*स्तम्भ 8 में निर्दिष्ट प्रत्येक चालान की प्रति संलग्न कीजिए।

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

New Delhi, the 11th June, 1979

NOTIFICATION

FOREIGN TRAVEL TAX

G.S.R. 355(E).—In exercise of the powers conferred by section 40 of the Finance Act, 1979 (21 of 1979), the Central Government hereby makes the following rules, namely:—

1. Short title and commencement.—(1) These rules may be called the Foreign Travel Tax Rules, 1979.

(2) They shall come into force on the 15th day of June, 1979.

2. Definitions.—In these rules, unless the context otherwise requires,—

- (1) "Act" means the Finance Act, 1979 (21 of 1979);
- (2) "Appellate Collector of Customs" means an officer appointed as such under section 4 of the Customs Act;
- (3) "Assistant Collector of Customs" means an officer appointed as such under section 4 of the Customs Act and having jurisdiction under the said Act over the customs port or customs airport of departure of the ship or aircraft as the case may be;
- (4) "carrier" means a carrier referred to in rule 3;
- (5) "Collector of Customs" means an officer appointed under section 4 of the Customs Act as Collector of Customs or Additional Collector of Customs and having jurisdiction under the said Act over the customs port or customs airport of departure of the ship or aircraft, as the case may be;
- (6) "Customs Act" means the Customs Act, 1962 (52 of 1962);

(7) "Form" means a form appended to these rules;

(8) "Officer of customs" has the same meaning as in the Customs Act;

(9) "tax" means the foreign travel tax leviable under Chapter V of the Act;

(10) "voyage" means the journey or movement of a ship or an aircraft from any customs port or customs airport of departure of the ship or aircraft in the territories to which Chapter V of the Act extends to a place outside India whether directly or after touching any other customs port or customs airport in the territories to which Chapter V of the Act extends;

(11) "treasury" means—

(i) the Customs House treasury; or

(ii) the Reserve Bank of India constituted under section 3 of the Reserve Bank of India Act, 1934 (2 of 1934), or any branch of the State Bank of India constituted under section 3 of the State Bank of India Act, 1955 (23 of 1955), or a bank constituted under section 3 of the Banking Companies (Acquisition and Transfer of Undertakings) Act, 1970 (5 of 1970), wherein the Central Government has an account in this behalf.

3. Collection of tax.—The tax shall be collected by a carrier authorised under sub-section (2) of section 35 of the Act.

4. Tax to be paid into the treasury.—The tax collected in any month by any carrier shall be paid by such carrier before the expiry of thirty days from the end of that month into the treasury at the place where the customs port or customs airport of departure of the ship or aircraft is situated:

Provided that the Collector of Customs may, on sufficient cause being shown and having regard to the system of accounting adopted by any carrier, allow such carrier to pay the tax before the expiry of a longer period than the period of thirty days aforesaid.

5. Claim for refund of tax.—(1) A carrier may claim refund of any amount paid by him into the treasury under rule 3 by way of tax, by making an application for such refund to the Assistant Collector of Customs before the expiry of six months from the date of payment of the tax in respect of which refund is claimed.

(2) If, on receipt of such application, the Assistant Collector of Customs is satisfied that the tax paid should be refunded, he may make an order accordingly.

6. Payment of collection charges.—The Collector of Customs shall, as soon as may be after the end of each financial year, pay to a carrier collection charges at the rate of one per cent of the amount of the tax paid by the carrier into the treasury during that year as reduced by the refunds, if any, made during that year to the carrier.

7. Notice for payment of tax not paid or underpaid or erroneously refunded.—(1) When any tax due has, for any reason whatsoever either not been paid or, has not been paid in full into the treasury under rule 4 or, has been erroneously refunded under rule 5, the Assistant Collector of Customs may, within six months from the relevant date, serve notice upon the carrier concerned, requiring him to show cause why he should not pay the amount specified in the notice:

Provided that where any tax has not been paid or has not been paid in full or has been erroneously refunded by reason of collusion or any wilful mis-statement or suppression of facts by the carrier, the provisions of this sub-rule shall have effect as if for the words "six months" the words "two years" were substituted.

(2) The Assistant Collector of Customs, after considering the representation, if any, made by the carrier on whom notice is served under sub-rule (1), shall determine the amount of tax to be paid by such carrier (not being in excess of the amount specified in the notice) and thereupon such carrier shall pay the amount so determined.

(3) For the purpose of sub-rule (1), the expression "relevant date" means—

(a) in case where the tax has not been paid, or has not been paid in full, the date of commencement of the international journey to which the non-payment or the under-payment, as the case may be, relates, or, the date on which the carrier files the relevant return under these rules, whichever is later;

(b) in a case where the tax has erroneously been refunded under rule 5, the date on which the refund was made.

8. Passenger manifest.—(1) At each customs port or customs airport to which Chapter V of the Act extends, in respect of every voyage by a ship or an aircraft, the carrier concerned shall prepare three copies of the passenger manifest showing therein the names of all the passengers on the voyage in Form 1 and shall present them at the time of the departure of the ship or aircraft, to the officer of customs having jurisdiction over that customs port customs airport of departure of the ship or aircraft as the case may be, in the territories to which Chapter V of the Act extends.

(2) The officer receiving the said copies of the manifest shall, after due verification and attestation, return one copy to the carrier.

9. Return regarding tax collected, etc.—Every carrier required under rule 4 to pay the tax into the treasury shall file, in respect of every month before the expiry of thirty days from the end of that month, before the Collector of Customs or his nominee having jurisdiction over the customs port or customs airport of departure of the ship or aircraft in the territories to which Chapter V of the Act extends, a return in Form 2 showing the particulars of the flights operated, number of passengers carried, amount of tax collected and paid into the treasury and amount of refund obtained, together with the attested copy of the manifest referred to in rule 8 in respect of each of the voyage operated during the month :

Provided that the Collector of Customs may, having regard to the system of accounting adopted by any carrier, allow such carrier to file such returns before the expiry of a longer period than the period of thirty days aforesaid.

10. Preservation of records by carrier.—Copies of all treasury challans or vouchers against which amounts collected as tax are paid into the treasury, returns and all other documents (not being a document the original or a copy whereof has been filed or submitted under any rule to any officer of customs) relating to any international journey shall be preserved by the carrier for a period of two years from the date on which such challan, voucher, return or other document was prepared :

Provided that the Collector of Customs may, by order in writing and for reasons to be recorded therein, require any carrier to preserve for a longer period than the said period of two years any such copy of challan, voucher, return or other document and the carrier against whom such order is made shall comply with such order.

11. Adjudication of penalties.—In every case in which any person is liable to penalty under section 38 of the Act, such penalty may be adjudged by an officer of customs mentioned in section 3(c) or section 3(d) of the Customs Act :

Provided that no officer of customs mentioned in section 3 of the Customs Act shall be competent to impose a penalty exceed five thousand rupees in any such case.

12. Issue of show cause notice before levy of penalty.—No order imposing any penalty on any person shall be made unless such person —

- (a) is given a notice in writing informing him of the grounds on which it is proposed to impose a penalty;
- (b) is given an opportunity of making a representation in writing within such reasonable time as may be specified in the notice, against the grounds for imposition of the penalty mentioned therein; and
- (c) is given a reasonable opportunity of being heard in the matter:

Provided that the notice referred to in clause (a) and the representation referred to in clause (b) may, at the instance the matter :

13. Appeal.—(1) Any person aggrieved by any decision or order passed, under the Act, these rules, by any officer of customs mentioned in section 3(c) of the Customs Act, may, within three months from the date of communication of such decision or order, appeal to the Appellate Collector of Customs to whom appears against the order of such officer of customs ordinarily lie under the Customs Act:

Provided that the appellate authority may, if satisfied that the appellant was prevented by sufficient cause from presenting the appeal within the aforesaid period of three months, allow it to be presented within a further period of three months.

(2) The appellate authority may, after giving an opportunity to the appellant to be heard if he so desires, and after making such inquiry as may be necessary, pass such order as it thinks fit, confirming, modifying or annulling the decision or order appealed against:

Provided that no order enhancing any penalty shall be passed by the appellate authority:

Provided further that where the appellate authority is of the opinion that any tax has not been paid or has not been paid in full into the treasury under rule 4 or has been erroneously refunded under rule 5, no order directing the payment of such tax shall be passed unless the appellant is given notice within the time limit specified in rule 7 to show cause against the proposed order.

14. Powers of revision of collector.—(1) An Officer of customs mentioned in section 3(a) of the Customs Act may, of his own motion or on the application of any aggrieved person, call for and examine the record of any proceedings in which an officer of customs subordinate to him has passed any decision or order under the Act, or these rules (not being an order passed in appeal under rule 13 for the purpose of satisfying himself as to the legality or propriety of any such decision or order and may pass such order thereon as he thinks fit:

Provided that no order enhancing any penalty shall be passed under this rule unless the person affected by the proposed order has been given a reasonable opportunity of showing cause against it:

Provided further that where the officer of customs mentioned in section 3(a) of the Customs Act is of the opinion that any tax has not been paid or has not been paid in full into the treasury under rule 4 or has been erroneously re-

funded under rule 5, no order directing the payment of such tax shall be made unless the person affected by the proposed order is given notice to show cause against it within the time limit specified in rule 7.

(2) No proceeding shall be initiated under this rule in respect of any decision or order after the expiry of a period of one year from the date of such decision or order.

(3) An officer of customs appointed as Additional Collector of Customs under section 4 of the Customs Act shall not be competent to exercise any powers of revision under this rule.

15. Revision by Central Government.—(1) The Central Government may, on the application of any person aggrieved by any order passed under rule 13 or rule 14 annul or modify such order.

(2) An application under sub-rule (1) shall be made within six months from the date of the communication to the applicant of the order against which the application is being made:

Provided that the Central Government may, if it is satisfied that the applicant was prevented by sufficient cause for presenting the application within the aforesaid period of six months, allow it to be presented within a further period of six months.

(3) The Central Government may, of its own motion, annul or modify any order passed under rule 13 or rule 14.

(4) No order enhancing any penalty shall be passed under this rule, unless, within one year from the date of the order sought to be annulled or modified, the person affected by the proposed order has been given a notice to show cause against it.

(5) Where the Central Government is of the opinion that any tax has not been paid or has not been paid in full into the treasury under rule 4 or has been erroneously refunded under rule 5, no order directing the payment of such tax shall be made under this rule, unless the person affected by the proposed order has been given notice to show cause against it within the time limit specified in rule 7.

16. Recovery of sums due to Government.—Where any tax demanded from any person or any penalty payable by any person under Chapter V of the Act is not paid, the officer of customs mentioned in section 3(d) of the Customs Act may prepare a certificate signed by him specifying the amount due and send it to the Collector of the district in which the said person owns property or resides or carries on business and the said Collector, on receipt of such certificate, shall proceed to recover from the said person the amount specified thereunder as if it were an arrear of land revenue.

17. Power to inspect.—(1) Every officer of customs authorised in this behalf by a special or general order of a gazetted officer of customs shall, for the purpose of ascertaining whether or not the requirements of the Act or these rules have

been complied with, at any reasonable time, have access to any premises of any carrier and have powers to require any person found therein, who for the time being is incharge thereof, to produce to him for his inspection any books of accounts, returns or other documents and to furnish to him such other information as he may reasonably require for the purpose of ascertaining whether the requirements of the Act or these rules have been complied with.

(2) Every such officer shall also have free access to any ship or aircraft engaged in the carriage of passengers on an international journey and have powers to require any person on board to produce any of the aforesaid documents

and to furnish the aforesaid information, for the said purpose.

18. Power to search ship, aircraft or premises.—(1) If an officer of customs not below the rank of an Assistant Collector of Customs has reason to believe that any document which in his opinion will be useful or relevant to any proceeding under the Act or these rules are secreted in any ship, aircraft or any premises of a carrier, he may authorise any officer of customs to search for such documents.

(2) The provisions of the Code of Criminal Procedure 1973 (2 of 1974) relating to searches shall, so far as they are applicable, apply in relation to searches under this rule.

[No. 2/FTT/79-F304/1/79-FTT]

FORM I

(Passenger report)

[See rule 8]

Name of the carrier

.....
.....

Voyage No.

.....
.....

Identifying particulars or name of Ship/Aircraft

.....
.....

Date of departure

.....
.....

Point of departure from India

.....
.....

Route and Station of origin and destination

Sl. No.	Name of the passenger		Male	Customs port or customs airport	Remarks
			Female		
			Child	of boarding in India	
1	2		3	4	5

(a) Total number of joining passengers

(b) Out of (a) the No. of passengers in transit exempted from payment of tax.

(c) Out of the difference between (a) and (b), number of passengers travelling to neighbouring countries.

(d) Out of the difference between (a) and (b), number of passengers going to countries other than neighbouring countries.

(e) Out of the number against (c), the number exempted from payment of tax.

(f) Out of the number against (d), the number exempted from payment of tax.

I declare that the particulars furnished in this report are true and complete to the best of my knowledge and belief.
 Date..... Signature of the carrier.....

Note: 1 In respect of passengers exempted from payment of foreign travel tax give reasons in the remarks column and indicate whether certificate wherever prescribed has been attached.

Note: 2 In respect of transit passengers, who are exempted from payment of foreign travel tax indicate the flight number by which arrived and the date.

FORM 2

[See rule 9]

Return showing the particulars of the flights operated, number of passengers carried, amount of tax collected and paid into the treasury and amount of refund obtained during the month of.....

Name of the carrier.....

Sl. No.	Running rotation No. for foreign travel tax	Voyage No. and date	Total No. of joining passengers	Out of number in column 3, number of transit passenger exempted from foreign travel tax	Out of the difference between the number in column 3 and 4		
					No. of passengers going to neighbour- ing countries	No. of passengers going to other countries	
1	2	3	4	5(a)	5(b)		
	No. of passengers exempted	Tax collected	Total tax paid into treasury (indicate separately all challan* Nos.)		Refund obtained during the month		
Out of the number shown in column 5(a)	Out of the number shown in column 5(b)			Challan No.	Amount Rs.	Refund order number and date	Amount received
6(a)	6(b)	7	8				9

I declare that the particulars furnished in this return are true and complete to the best of my knowledge and belief. In the event of any mistake being detected later resulting in non-collection of tax, I hold myself responsible for the mistake and also agree to make good the consequent loss in revenue.

Date

Signature of the carrier

Note: *Attach copy of each challan referred to in column 8.

सां का० सि० ३५६ (ग्र).—वित्त विभाग, १९७९ (१९७९ का २१) की घारा ३५ की उपधारा (१) द्वारा प्रवास जनकीयों का प्रयोग करने हुए, उक्त उपधारा में दर्ज विदेशीयों और भारत तथा कठियाँ विदेशी के बीच यात्रियों द्वारा मन्त्रालय यात्राओं के लिए देश किए जाने में रक्तने हुए, निम्नलिखित देशों को उक्त उपधारा के प्रयोजनों के लिए पड़ोसी देशों के द्वारा विनियोग करते हैं, प्रथम्—

- (क) अफगानिस्तान,
- (ख) बंगलादेश,
- (ग) भूटान,
- (घ) बर्मा,
- (ङ) नेपाल,
- (च) पाकिस्तान,
- (ट) श्रीलंका,
- (ज) मलदीव

[ई० ३/एफ टो टी०/७९-का० ३०४/१/७९-एफ टो टी०]

G.S.R. 356(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 35 of the Finance Act, 1979 (21 of 1979), the Central Government, having regard to the circumstances mentioned in the said sub-section and the fare payable for international journeys by passengers between India and certain foreign countries, hereby specifies the following countries as the neighbouring countries for the purposes of the said sub-section, namely:—

- (a) Afghanistan,
- (b) Bangladesh,
- (c) Bhutan,
- (d) Burma,
- (e) Nepal,
- (f) Pakistan,
- (g) Sri Lanka,
- (h) The Maldives.

[No. 3/FTT/79-F304/1/79-FTT]

सां का० नि० 357 (प्र):—केन्द्रीय सरकार, वित्त अधिनियम, 1979 (1979 का 21) की धारा 35 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, प्रथम याहूक को, जिसके बायुयान या पोत या दोनों भारत में किसी सीमा-शुल्क पत्तन या सीमा-शुल्क विमान पत्तन से अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा करने में लगे हैं, उक्त अधिनियम की धारा 35 की उपधारा (1) के अधीन उद्ग्रहणीय विदेश यात्रा कर का संयहण करने के लिए प्राधिकृत करती है।

[सं० ५/एफ/४ टी दी/७९—का० ३०४/१/७९—एफ टी दी]

G.S.R. 357(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (2) of section 35 of the Finance Act, 1979 (21 of 1979), the Central Government hereby authorises every carrier whose aircrafts or ships or both are engaged in performing international journeys from any customs port or customs airport in India, to collect the foreign travel tax leviable under sub-section (1) of section 35 of the said Act.

[No. 4/FTT/79-F. 304/1/79-FTT]

सां का० नि० 358 (प्र):—केन्द्रीय सरकार, वित्त अधिनियम, 1979 (1979 का 21) की धारा 36 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, यह समाधान हो जाने पर कि ऐसा करना आवश्यक नहीं गमीचीन है, रामेश्वरम से नवाहमनार तक पोत द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा करने वाले प्रथम यात्री को, ऐसी यात्रा की बाबत उक्त अधिनियम की धारा 35 की उपधारा (1) के अधीन उद्ग्रहणीय सम्पूर्ण विदेश यात्रा कर से छूट देती है।

[सं० ५/एफ टी दी/७९—का० ३०४/१/७९—एफ टी दी]

G.S.R. 358(E).—In exercise of the powers conferred by section 36 of the Finance Act, 1979 (21 of 1979), the Central Government, being satisfied that it is necessary and expedient so to do, hereby exempts every passenger performing an international journey by ship from Rameshwaram to Talaimanner, from the whole of the foreign travel tax leviable in respect of such journey under sub-section (1) of section 35 of the said Act.

[No. 5/FTT/79-F. 304/1/79-FTT]

सां का० नि० 359 (प्र):—केन्द्रीय सरकार, वित्त अधिनियम, 1979 (1979 का 21) की धारा 36 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, यह समाधान हो जाने पर कि सौक्ष्मिति में ऐसा करना आवश्यक और समीचीन है, प्रभिवहन में के प्रथम यात्री को, जो भारत से बाहर नियम स्थान को अगली उपलब्ध उड़ान द्वारा भारत छोड़ता है, उक्त अधिनियम की धारा 35 की उपधारा (1) के अधीन उद्ग्रहणीय विदेश यात्रा कर के संदर्भ में छूट देती है, परन्तु यह तब जब ऐसा यात्री, अपूर्णे पर सीमा-शुल्क नाफा से आहर न जाए।

[सं० ६/एफ टी दी/७९—का० ३०४/१/७९—एफ टी दी]

G.S.R. 359(E).—In exercise of the powers conferred by section 36 of the Finance Act, 1979 (21 of 1979) the Central Government, being satisfied that it is necessary and expedient so to do, hereby exempts every passenger in transit who leaves India by the next available flight for onward travel to a place outside India from the payment of foreign travel tax leviable under sub-section (1) of section 35 of the said Act, provided such passenger on arrival, does not go beyond the customs barrier.

[No. 6/FTT/79-F. 304/1/79-FTT]

सां का० नि० 360 (प्र):—केन्द्रीय सरकार, वित्त अधिनियम, 1979 (1979 का 21) की धारा 36 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, यह समाधान हो जाने पर कि सोक हित में ऐसा करना

आवश्यक और समीचीन है, नीचे दी गई मारणी के मन्त्रम् 2 में विनिर्दिष्ट यात्रियों के प्रवासी को, अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा की आवश्यकता उक्त अधिनियम की धारा 35 की उपधारा (1) के अधीन उद्ग्रहणीय विदेश यात्रा कर के संदर्भ में उक्त सारणी के मन्त्रम् 3 की नित्यानी प्रविधि में विनिर्दिष्ट शर्तों के अधीन रहते हुए, छूट देती है।

सारली

अम सं०	यात्रियों के प्रवास के संदर्भ में	शर्त में
1	2	3
1. भारत में राजनयिक प्राप्तियाँ वाले राजनयिक मिशन के सदस्य और उनके परिवार।	भारत में राजनयिक प्राप्तियाँ वाले उसके द्वारा इस निभिन प्राधिकृत किसी अधिकारी से इस प्रभाव का प्रभाणपत्र विद्वाने पर कि यात्री राजनयिक प्राप्तियाँ वाले किसी अधिकारी के परिवार वा कोई सदस्य है।	
2. भारत में विदेशी कांसल के वृत्ति कौसलीय अधिकारी वा उनके परिवार।	भारत में विदेशी कांसलीय पद के प्रधान वा उसके द्वारा इस निभिन प्राधिकृत किसी अधिकारी से इस प्रभाव का प्रभाणपत्र विद्वाने पर कि यात्री वृत्ति कौसल अधिकारी वा ऐसे अधिकारी के परिवार का सदस्य है।	
3. भारत में संत्रक राष्ट्र के या भारत में संयुक्त राष्ट्र के किसी विशिष्ट अधिकरण के अधिकारी और उनके परिवार जो भारत के राष्ट्रिक या स्थायी निवासी नहीं हैं।	भारत में संयुक्त राष्ट्र के कार्यालय के प्रधान वा भारत में संयुक्त राष्ट्र के विशिष्ट अधिकरण के प्रधान वा भारत में संयुक्त राष्ट्र के कार्यालय के प्रधान द्वारा या भारत में संयुक्त राष्ट्र के विशिष्ट अधिकरण के प्रधान द्वारा प्राधिकृत किसी अधिकारी से इस प्रभाव का प्रभाणपत्र विद्वाने पर कि यात्री संयुक्त राष्ट्र (विशेषिकार और उन्मुक्तियाँ) अधिनियम, 1947 (1917 का 46) के उपबन्धों के अधीन अनुशेय सीमा-शुल्क प्रमुखियाँ वा का हकदार है या 1947 के उक्त अधिनियम के उपबन्धों के अधीन अनुशेय सीमा-शुल्क प्रमुखियाँ वा के हकदार ऐसे अधिकारी के परिवार का सदस्य है।	

[सं० ७/एफ टी दी/७९—का० ३०४/१/७९—एफ टी दी]

प्र० क० मरकार, अवश लिपि

G.S.R. No. 360 (E).—In exercise of the powers conferred by section 36 of the Finance Act, 1979 (21 of 1979), the Central Government, being satisfied that it is necessary and expedient so to do, hereby exempts the categories of passengers specified in column 2 of the Table below from payment of foreign

travel tax leviable under sub-section (1) of section 35 of the said Act, in respect of an international journey subject to the conditions specified in the corresponding entry in column 3 of the said Table.

TABLE

Sl. No.	Category of passengers	Conditions
1	2	3
1.	Members of Diplomatic Missions in India holding Diplomatic Status and their families.	Production of a certificate from the Head of Diplomatic Mission in India or an Officer authorised by him in this behalf to the effect that the passenger enjoys diplomatic status or is a member of the family of an officer enjoying diplomatic status.
2.	Career Consular Officers of foreign consulate in India and their families.	Production of a certificate from the Head of the foreign consular post in India or an officer authorised by him in this behalf to the effect that the passenger is a Career Consular Officer or is a member of the family of such officer.

1	2	3
3.	Officials of the United Nations in India or any specialised agency of the United Nations in India and their families are not nationals of, or permanently resident in, India.	Production of a certificate from the Head of the United Nations Office in India or the Head of the specialised agency of the United Nations in India or by an officer authorised by Head of the United Nations office in India or the Head of the specialised agency of the United Nations in India to the effect that the passenger is entitled to customs privileges of admissible under the provisions of the United Nations (Privileges and Immunities) Act, 1947 (46 of 1947) or is a member of the family of such official entitled to customs privileges as admissible under the Provisions of the said Act of 1947.

[No. 7/FTT/79-F. 304/1/79-FTT].
A.K. SARKAR, Under Secy.

2. यह अधिसूचना 31 दिसम्बर, 1979 तक, जिसमें यह तारीख भी सम्मिलित है,
प्रकृत रहेगी।

(208/79)

[फा. सं. 153/3/79-सी एक्स 4]

एस. के. मल्ही, उप सचिव

**MINISTRY OF FINANCE
(Department of Revenue)**

NOTIFICATION

New Delhi, the 11th June, 1979

CENTRAL EXCISE

G. S. R. 361(E).—In exercise of the powers conferred by sub-rule (1) of rule 8 of the Central Excise Rules, 1944, the Central Government hereby exempts bare copper wires finer than 14 SWG, falling under Item No. 33B of the First Schedule to the Central Excise and Salt Act, 1944 (1 of 1944), from the whole of the duty of excise leviable thereon.

2. This notification shall be in force upto and inclusive of the 31st day of December, 1979.

[No. 208/79]

[F. No. 153/3/79-C. X. 4.]

S. K. MALHI Dy. Secy.